Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 12, Issue No. 2, January-2017, ISSN 2230-7540

दूरस्थ संगीत शिक्षण की उपयोगिता एवं उसमें सहायक विभिन्न घटक

Reenu Sharma*

M. A. Music, (Net, UGC)

शोध लेख :– आज के इस युग में प्रत्येक व्यक्ति के लिए संगीत एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय बन चुका है। प्रत्येक व्यक्ति संगीत के माध्यम से अपनी समस्याओं या अपने जीवन की परेशानियों को सुलझा रहा है। क्योंकि संगीत का अर्थ ही यह माना गया है कि जब मानव आलौकिक चिंताओं को भूलकर आनन्द की अनुभूति करें तो वह संगीत है और आज के इस वैज्ञानिक युग में विज्ञान ने संगीत के प्रसार और संचार के साधन रेड़ियो, टेपरीकार्ड, रिकार्डप्लेयर्स, टेलीविजन आदि इतने सुलभ कर दिये है कि कोई भी इनके प्रभाव से अछूता नहीं रहा। इन सभी उपकरणों का संगीत शिक्षण में विशेष महत्व हैं और इन उपकरणों ने दूरस्थ शिक्षा की व्यापकता और शक्ति को बढ़ाया है। संगीत में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के मुख्य घटक इस प्रकार हो सकते हैं।

मुख्य घटकः– रेड़ियों, टेपरिकार्डर, टेलीविजन, ग्रामोफोन, कम्प्यूटर, इन्टरनेट, इलैक्ट्रॉनिक वाद्य यन्त्र पत्राचार द्वारा संकलित सामग्री, संगीत सम्मेलन, सामूहिक प्रशिक्षण कार्यशाला एवं परीक्षाएं।

----------X----------

1. रेड़ियों :–

सन् 1886 ई0 में हेनरिक हर्डस के द्वारा पहला ट्रांसमीशन किया गया। सन् 1897 ई0 में मार्कोनी 18 मील दूर सिग्नल भेजने में सफल हुआ। इसलिए गुगलेभो मार्कोनी को रेड़ियो का आविष्कारक माना जाता है। रेड़ियो के आगमन से भारतीय संगीत के विकास में एक नई क्रान्ति आई। रेड़ियों को मनोरंजन का सबसे सस्ता व श्रेष्ठ माध्यम माना जाता हैं। रेड़ियो के आगमन के कारण जन साधाराण में संगीत इतना सुलभ हो गया है कि इसके प्रसारण को सुनकर ही बहुत कुछ ज्ञान के रूप में ग्रहण किया जा सकता है। इसके द्वारा बड़े–बड़े कलाकारों का गायन, वादन घर बैठे ही सुना जा सकता है। यह संगीत श्रृव्यात्मक घटकों में से एक घटक माना जाता है। आज कई दैनिक, साप्ताहिक, मासिक व वार्षिक संगीत के कार्यक्रम रेड़ियों द्वारा प्रस्तुत किए जाते है। रेड़ियों के संग्रहालयों में पुराने उस्तादों के गायन–वादन की महत्वपूर्ण एवं अथाह सामग्री सुरक्षित हैं, तथा रेड़ियों समय–समय पर इनका प्रसारण भी करता रहता है। ''रेड़ियों पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों में संगीत शिक्षा के कार्यक्रमों का प्रसारण उच्च कोटि के संगीतज्ञों का गायन–वादन, शास्त्र–चर्चा आदि संगीत विद्यार्थियों के लिए अत्यंत लाभप्रद है।''

विभिन्न संगीत सम्मेलनों तथा राष्ट्रीय कार्यक्रमों आदि का प्रसारण भी रेड़ियों द्वारा किया जाता है। इस प्रकार संचार माध्यम रेड़ियों ने संचार के क्षेत्र में जो भूमिका अदा की है वह अत्यन्त सराहनीय है।

आकाशवाणी :–

आकाशवाणी और शास्त्रीय संगीत की दीर्घ सहायता में बहुत से पड़ाव आए और आज आकाशवाणी संगीत के लिए सर्वाधिक लोकप्रिय माध्यम बन गया है। आकाशवाणी प्रसारण द्वारा जहां एक ओर सभी प्रकार का संगीत सर्वसाधारण के लिए सुलभ हो गया हैं वही दूसरी ओर संगीत साधकों के लिए भी यह कम महत्वपूर्ण सिद्ध नहीं हुआ।

आकाशवाणी "(A.I.R) All India Radio" जहां एक विशिष्ठ स्थान पर अर्थात् आकाशवाणी केन्द्र पर ही गायन वादन होता हैं और उसका प्रसारण लोग अपने घरों में एक छोटे से यंत्र रेड़ियों द्वारा सुन सकते है। आकाशवाणी के बाल कार्यक्रम, सुगम संगीत के कार्यक्रम कुछ ऐसे उदाहरण हैं जिसमें आकाशवाणी द्वारा हर वर्ग के श्रोताओं में संगीत सौन्दर्यानुभूति के विकास की दिशा में प्रयास का प्रमाण मिलता है। इस प्रकार संगीत कला के प्रचार–प्रसार में आकाशवाणी का विशेष महत्व रहा है।

2. टेपरिकाडरः–

यद्यपि टेपरिकार्डर के आविष्कार की ओर प्रयास 19वीं शताब्दी से ही जारी था जिसका आरम्भ सन् 1888 ई0 में गैवलिन स्मिथ द्वारा एक लोहे के तार को समान गति से चलाकर इसमें ध्वनि अंकन की एक पद्धति से बताया गया था। सन् 1898 ई0 में वाल्डीकर पालसन ने टेपरिकार्डर का आविष्कार किया तथा सन् 1936 ई0 में प्रथम बार उसका प्रयोग 'बार्लिन रेड़ियो फेअर मेग्नेकटोफोन कम्पनी' जर्मनी ने किया। टेपरिकार्डर संगीत शिक्षा के क्षेत्र में सबसे सुलभ और सस्ता उपकरण साबित हुआ है। शिक्षक की अनुपस्थिति में यह उपकरण एक बड़ी सीमा तक विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करने में सहायता करता हैं। विशेषतः नेत्रहीन व्यक्तियों के लिए तो यह वरदान ही सिद्ध हुआ है। आर्थिक साधनों के प्रभाव में शिक्षण उपलब्ध कैसेट्स पर ही एक बार रिकार्ड की गई सामग्री को पूर्ण उपयोग हो जाने पर पुनः उस पर अपनी सांगीतिक सामग्री को रिकार्ड करके विद्यार्थियों

www.ignited.in

को उपलब्ध करवा सकता हैं और टेपरिकार्डर पर अपने मनपसंद कलाकर की कृतियों को रिकार्ड करके बार–बार सुना जा सकता हैं अर्थात दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में टेपरिकार्डर एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

3. टेलीविजनः–

टेलीविजन दृश्य, श्रृव्य दोनों का माध्यम सर्वप्रथम सन् 1955 ई0 में फिलिप्स कंपनी ने दिल्ली के औद्योगिक क्षेत्र में दूरदर्शन अथवा टेलीविजन का प्रदर्शन किया। 1956 ई0 में दिल्ली से यूनेस्को को एक सम्मेलन आयोजित हुआ और 15 सितम्बर 1959 ई0 को भारत में टेलीविजन की विधिवत् शुरूआत हुई। टेलीविजन विद्यार्थियों के लिए हमेशा ही एक आकर्षण का केन्द्र रहा है। संगीत गोष्ठियां, संगीत सम्मेलन, सेमिनार, प्रश्नोतरी आदि कुछ टेलीविजन पर प्रसारित होने वाले ऐसे कार्यक्रम हैं, जिन्हें सुनकर व देखकर बालक बिना परिश्रम के उनमें निहित संगीतात्मक सामग्री आत्मसात कर लेते हैं।

शास्त्रीय संगीत से संबन्धित कार्यक्रम 'सा रे ग म प' शास्त्रीय संगीत के प्रचार, प्रसार तथा विद्यार्थियों के लिए सराहनीय कार्यक्रम हैं जिसमें विद्यार्थियों को मंच व शास्त्रीय संगीत के कलाकारों को 'जज' के रूप में नाम, मान–सम्मान भी प्राप्त हो रहा हैं। टेलीविजन पर संगीत सम्बन्धी प्रतियोगिताएं व संगीत सम्मेलनों का सीधा प्रसारण दिखाया जाता हैं। जिससे विद्यार्थी उचित ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। टेलीविजन के माध्यम से हम विभिन्न कलाकारों की कृतियां जैसे– (हाव–भाव, बैठने का ढंग, गले की हरकत आदि) सीख सकते हैं। इसके अतिरिक्त दूरदर्शन द्वारा प्रसारित गायन–वादन व नृत्य की विभिन्न प्रस्तुतियां समय–समय पर विभिन्न चैनलों द्वारा प्रस्तुत की जाती है। प्रत्येक राज्य के लोक संगीत के माध्यम से उसकी संस्कृति का ज्ञान हमें टेलीविजन प्रसारण के माध्यम से ही हो जाता हैं, साथ ही इसके कारण हम प्रत्येक राज्य का लोक संगीत सुन, समझ व सीख सकते हैं। इस प्रकार टेलीविजन का आगमन दूरस्थ शिक्षण में सबसे अधिक लाभदायी सिद्ध हुआ हैं।

4. ग्रामोफोनः–

सन् 1990 से पहले किसी गायन या वादन को सुनने के लिए बहुत कष्ट उठाने पड़ते थे। बड़े कलाकारों का गायन केवल पैसे वालें ही सुन पाते थे। परन्तु आज हम ग्रामोफोन की सहायता से बड़े से बड़े कलाकारों को इच्छानुसार सुन सकते है। आज ग्रामोफोन रिकार्ड के माध्यम से उस समय के कलाकार जिनका नाम संगीत जगत् में अमर हैं, उनका गायन–वादन हम सुन सकते हैं। ग्रामोफोन रिकार्ड ने संगीत के क्रियात्मक क्षेत्र को काफी हद तक सुरक्षित बना दिया है। आज घरानेदार गायकी अथवा किसी भी गायन शैली को विद्यार्थी सुलभता से घर बैठे अनुकरण द्वारा सीख सकता हैं। बाल गन्धर्व के रिकार्डो के माध्यम से उनकी गायकी का पूर्णतयः अनुकरण करके कुमार गन्धर्व ने एक बार बम्बई में 'भला सले बाल गन्धर्व' नाम से प्रस्तुत किया था। पहले समय में पुराने उस्तादों की सेवा करके भी बंदिश की स्थाई ही मिलती परन्तु आज पैसों से रिकार्डस खरीदकर कई बंदिश मिल जाती है।

5. कम्प्यूटरः–

सन् 1975 में मल्होत्रा ने माइक्रो कम्पयूटर नामक एक कम्पनी बनाई और अपना भारतीय माइक्रो कम्प्यूटर लिमिटेड भी बनाया। सन् 1991 में भारत सरकार के इलैक्ट्रोनिक विभाग ने विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं संस्थाओं को ई0आर0नेट के कनेक्शन दिए जिनका उददेश्य केवल शैक्षिक था। कम्प्यूटर की सहायता से म्यूजिक सिंथेसाइजर की ही तरह अति शुद्धता के साथ किसी भी धुन को बजाया जा सकता है। किसी वाद्य यन्त्र की ध्वनि उत्पन्न की जा सकती है। अमेरिका 'बैल टेलीफोन लैबोरेट्री' में पूरे आर्केस्ट्रा के संगीत को कम्पयूटर से उत्पन्न किया गया। कम्प्यूटर की सहायता से रागों की रचना भी की जा सकती है। कई धूनों को जोड़कर नए–नए राग बना सकते हैं तथा नए रागों का आविष्कार भी कर सकते हैं। कम्पयूटर की सहायतार से ध्वनि की आवृति, तीव्रता, तारता आदि गुण नाते जा सकते हैं, व धुन एवं राग आसानी से पहचाने जा सकते हैं और सूक्ष्म त्रुटियां भी मालूम की जा सकती हैं। प्रो0 एच0बी0 मोडक ने जो मुम्बई में नैश्नल सेंटर फॉर परफार्मिंग आर्टस में प्रोफेसर के पद पर कार्य कर रहे हैं इन्होंने सन् 1970 में एक आटोमैटिक म्यूजिकल यंत्र बनाया जो संगीत की आवृति व तारता को निर्धारित कर सके।

इन्टरनेटः–

इन्टरनेट तकनीक का प्रारम्भ वैज्ञानिक 'विन्टन कार्फ' द्वारा सन् 1973 में किया गया। इन्टरनेट सूचना प्राद्यौगिकी तंत्र का वह माध्यम है जो सम्पूर्ण विश्व को उपग्रह के माध्यम से जोड़ता है अर्थात इन्टरनेट अनेक कम्प्यूटरों के नेटवर्को का समूह है जिसमें सभी कम्प्यूटर टेलीफोन तार या सैटेलाइट के माध्यम से जुड़े होते है। वर्तमान समय में कम्प्यूटर इन्टरनेट के माध्यम से संगीत शिक्षण की चर्चा हो रही हैं। संगीत शिक्षण को विश्वव्यापी बनाने के लिए इन्टरनेट की प्रमुख सेवाओं ई0 मेल, ऑनलाइन चैटिंग, वीडियो कान्फैसिंग, एजुसेट आदि का प्रयोग किया जा रहा हैं। दूरस्थ शिक्षा के लिए भी यह उपयोगी हैं। इन्टरनेट पर उपलब्ध कुछ संगीत सम्बन्धी वेबसाइट

1. www.Chandra Kantha. com
2. www.Kippen.org.
3. Hindustani classical Music
4. www. artindia.net
5. www. ipscra.org.
6. www. wedring.com.

6. इलैक्ट्रोनिक वाद्य यन्त्रः–

तानपूरे में चार से छ0 स्वरों के एक साथ बजाने की व्यवस्था दी गई हैं। नवीन ढॉचे में चार प्रकार के नमूने प्रयोग किए जा रहे हैं। इनमें दो ढॉचे चार स्वरों की सुविधा से युक्त है। एवं दो ढॉचे पॉच स्वरों की सुविधा से युक्त है। चार स्वरों की सुविधा वाले यंत्र 146 डडग्100डडग्70डड की नाप है इनका वजन 1 ज्ञह हैं। अर्थात स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि आज इलैक्ट्रोनिक तानपुरा व इलैक्ट्रोनिक तबला बहुत अधिक

प्रचार–प्रसार में है जिनकी सहायता से विद्यार्थी घर बैठे अपना गायन व वादन कर सकते हैं। आज संगीत की बढ़ती उपयोगिता में यह बहुत अधिक सुविधाजनक है।

7. पत्राचार द्वारा संकलित सामग्रीः–

ग्रन्थों के अतिरिक्ति पत्र–पत्रिकाओं के प्रकाशन ने भी संगीत शिक्षा को सुलभ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं। भारत की प्रथम संगीत पत्रिका ''ओरियण्इक म्यूजिक इन स्टाफ नोटेशन'' जो कि अंग्रेजी में प्रकाशित है, मानी जाती हैं। सन् 1910 में पo पुलस्कर की 'संगीतामृत प्रवाह' मासिक पत्रिका भी उल्लेखनीय हैं। सगींत से सम्बन्धित कई पत्रिकाएं जेसे संगीत कला बिहार, संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका, संगीत नाटक, अकादमी द्वारा प्रकाशित संगीत नाटक, रविन्द्र संगीत परिषद द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका विश्ववीणा व दिल्ली संगीत समाज की ओर से प्रकाशित अर्धवार्षिक पत्रिका इण्डियन जनरल आदि पत्रिकाएं संगीत के प्रचार व शिक्षण में उत्साह वर्धक रूप में सक्रिय हैं।

8. संगीत सम्मेलनः–

संगीत सम्मेलन व गौष्ठियां भी संगीत शिक्षा को सुलभ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, 'समन' आदि संगीत सम्मेलन प्राचीन भारत में भी हुआ करते थे परन्तु 1926 तक भातखण्डे जी के प्रयासों से पुनः वृहद संगीत सम्मेलनों का आयोजन प्रारम्भ हो चुका था। जालंधर में बाबा हरिवल्लभ की स्मृति में दिसंबर माह में त्रिदिवसीय 'हरिवल्लभ संगीत सम्मेलन' कलकता में 'तानसेन संगीत सम्मेलन', दिल्ली में मार्च तथा अप्रैल माह में 'शंकर लाल संगीत समारोह', चण्डीगढ में प्राचीन कला केन्द्र द्वारा आयोजित 'अखिल भारतीय भास्कर राव संगीत एवं नृत्य सम्मलेन, उस्ताद अमजद अली खां द्वारा स्थापित 'द इण्डियन म्युजिक सोसायटी' द्वारा दिल्ली, मुम्बई व कलकता में आयोजित उस्ताद हाफिज अली खां संगीत समारोह आदि कुछ ऐसे सम्मेलन हैं जो संगीत शिक्षण में सहायक हैं। बड़े–बड़े शहरों के अतिरिक्त अन्य शहरों में भी छोटे–छोटे संगीत सम्मेलन होते हैं। जिनमें महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों के विद्याार्थी अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हैं संगीत की जो कमियां, खामियां दूरवर्ती शिक्षार्थियों में रह जाती हैं, काफी हद तक इन सम्मेलनों के माध्यम से उनकी पूर्ति की जाती है।

9. सामूहिक पशिक्षण कार्यशाला एवं परीक्षाएंः–

सामूहिक प्रशिक्षण कार्यशाला के माध्यम से निम्न प्रकार से शिक्षा दी जा सकती है।

1). चर्चा के माध्यम से :–

इसमें विद्यार्थी अपने–अपने विचार प्रस्तुत कर सकते हैं।

2). सांगीतिक यंत्रों की कार्य–प्रणाली के माध्यम से :–

इसमें वाद्यों का प्रयोग, कंठ साधना के लिए आवश्यक प्रक्रियांए व व्यायाम तथा सामूहिक रूप से संगीतात्मक स्वरावलियों की गुणबद्धता या सरंचना सम्बन्धी प्रयोग सम्मिलित करके विद्यार्थियों में स्वयं प्रयोग करने की क्षमता का विकास किया जा सकता है।

निष्कर्षः–

निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि आज के इस वैज्ञानिक युग में दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से संगीत दिनों–दिन उन्नति के शिखर पर पहुंच रहा हैं। दूरस्थ शिक्षा की सहायता से संगीत की उपयोगिता भी बढ़ रही हैं और यह जन साधारण तक आसानी से पहुंच पा रहा है जिससे संगीत के क्षेत्र में आने वाली समस्याओं का समाधान आसानी से हो रहा है।

सन्दर्भ सूचो :–

सत्यवती शर्मा– संगीत का समाज शास्त्र

डा0 पूनम दता– भारतीय संगीत (शिक्षा और उददेश्य)

डॉ. मृत्युजय शर्मा– संगीत मैनुअल– द्वितीय संस्करण–2005

डॉ. रामकान्त द्विवेदी उतर भारतीय शास्त्रीय गायन का ध्वन्यंकित अध्ययन– प्रथम संस्करण –1987

डॉ. शुचिस्मिता, आकाशवाणी एवं हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत

डॉ. शुचिस्मिता, आकाशवाणी एवं हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत–प्रथम संस्करण –2006

डॉ. देवव्रत सिंह– भारतीय इलैक्ट्रोनिक मीडिया– प्रथम संस्करण –2007

डॉ. अमिता शर्मा शास्त्रीय संगीत का विकास

डॉ. अशोक कुमार 'यमन' रेडियो और संगीत–प्रथम संस्करण–2011

डॉ. अशोक कुमार 'यमन' टे0वि0 और संगीत प्रथम संस्करण–2014

डॉ. अनीता गौतम, भारतीय संगीत में वैज्ञानिक उपकरणों का प्रयोग–पृ0–10 प्रथम संस्करण –2002

डॉ. लालमणि मिश्र, भारतीय संगीत वाद्य–तृतीय संस्करण–2005

Corresponding Author

Reenu Sharma*

M. A. Music, (Net, UGC)

E-Mail – arora.kips@gmail.com